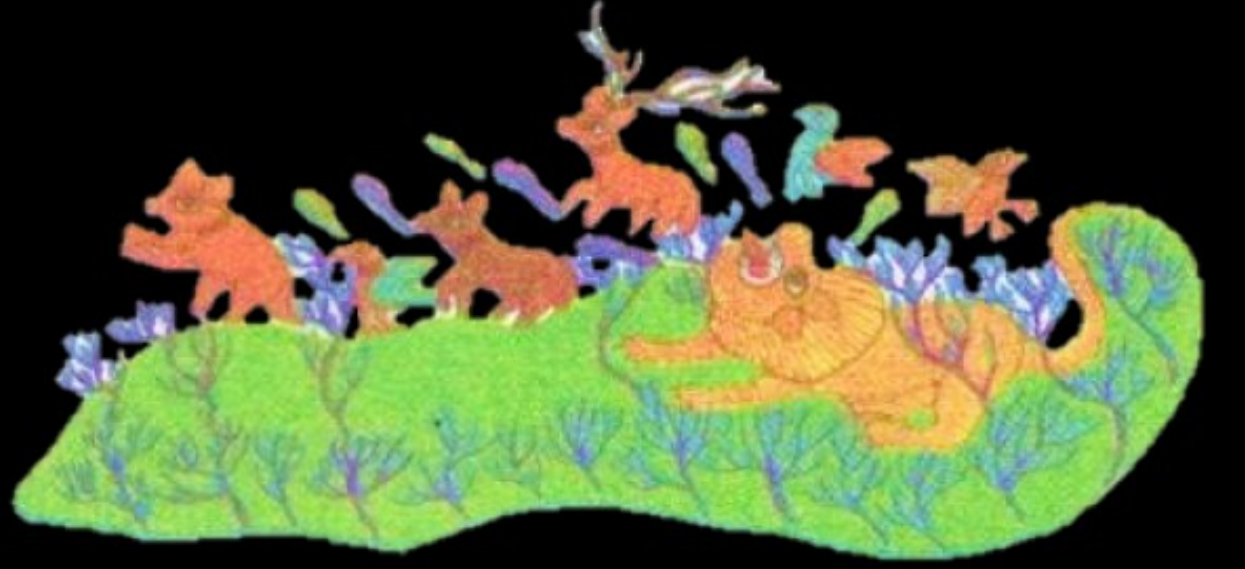


डिजीभारतम्



तृतीयः पाठः

PREPARED BY :- MR. MEGHRAJ MEENA (TGT SANSKRIT)

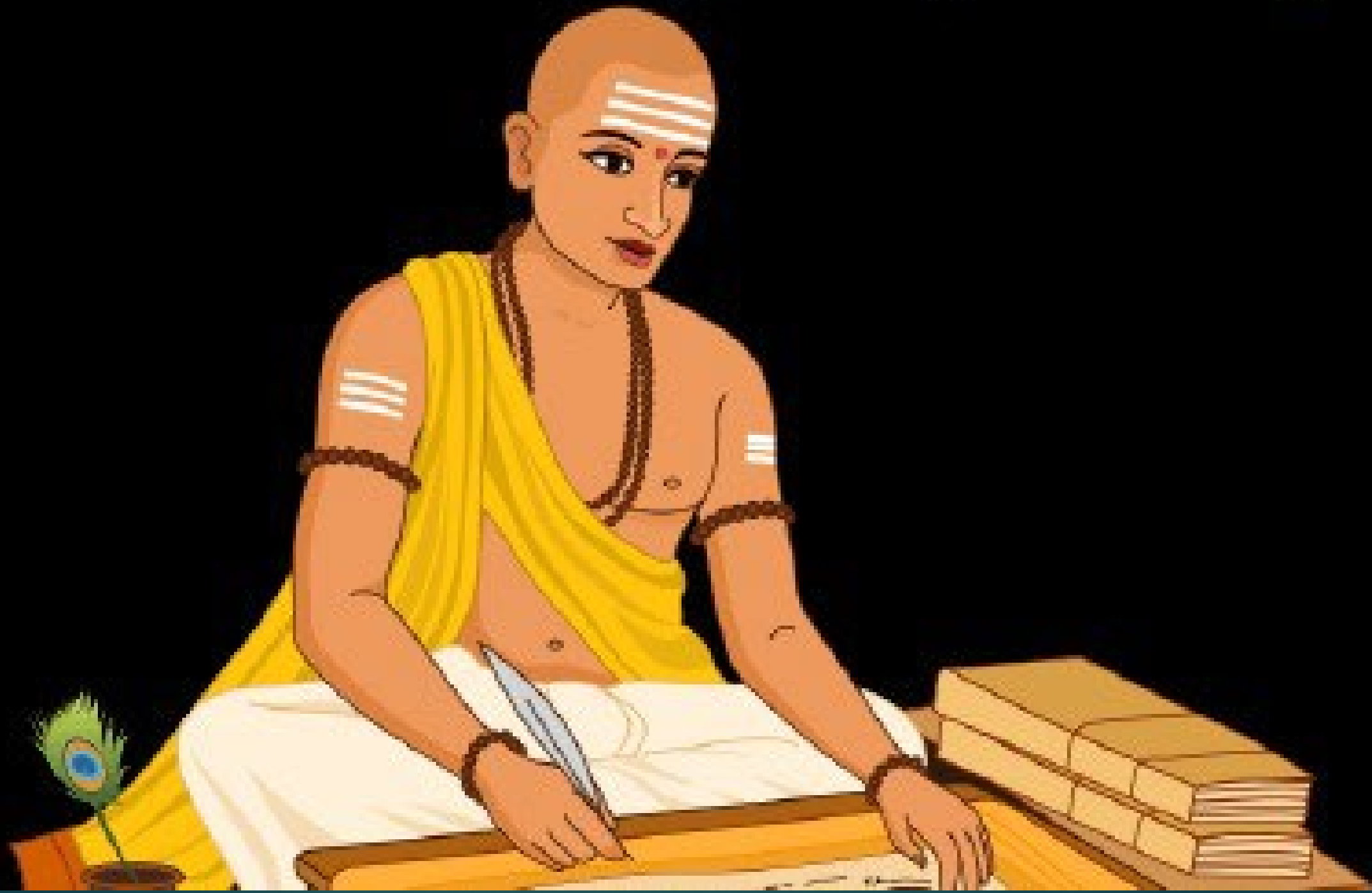
KV MANDSAUR

प्रस्तुत पाठ "डिजिटलइण्डिया" के मूल भाव को लेकर लिखा गया निबन्धात्मक पाठ है। इसमें वैज्ञानिक प्रगति के उन आयामों को छुआ गया है, जिनमें हम एक "क्लिक" द्वारा बहुत कुछ कर सकते हैं। आज इन्टरनेट ने हमारे जीवन को कितना सरल बना दिया है। हम भौगोलिक दृष्टि से एक दूसरे के अत्यन्त निकट आ गए हैं। इसके द्वारा जीवन के प्रत्येक क्रियाकलाप सुविधाजनक हो गए हैं। ऐसे ही भावों को यहाँ सरल संस्कृत में व्यक्त किया गया है।

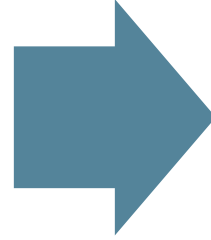


अद्य सम्पूर्णविश्वे "डिजिटलइण्डिया"
इत्यस्य चर्चा श्रूयते। अस्य पदस्य कः
भावः इति मनसि जिज्ञासा उत्पद्यते।
कालपरिवर्तनेन सह मानवस्य
आवश्यकताऽपि परिवर्तते।
प्राचीनकाले ज्ञानस्य आदान-प्रदानं
मौखिकम् आसीत्, विद्या च
श्रुतिपरम्परया गृह्यते स्म। अनन्तरं
तालपत्रोपरि भोजपत्रोपरि च
लेखनकार्यम् आरब्धम्।

आज सारे संसार में "डिजिटल इंडिया" की
चर्चा सुनी जाती है 'इस शब्द का भाव
क्या है'- ऐसी जानने की इच्छा उत्पन्न
होती है काल के परिवर्तन के साथ
मानव की आवश्यकता भी परिवर्तित
होती है। पुराने समय में ज्ञान का
आदान-प्रदान वाणी के द्वारा होता था
तथा विद्या श्रवण परंपरा से गृहीत की
जाती थी। तत्पश्चात् ताल पत्र के ऊपर
तथा भोजपत्र पर लेखन कार्य आरंभ
हुआ।



परवर्तिनि काले कर्गदस्य लेखन्याः च
आविष्कारेण सर्वेषामेव मनोगतानां
भावानां कर्गदोपरि लेखनं प्रारब्धम्।
टङ्कणयन्त्रस्य आविष्कारेण तु लिखिता
सामग्री टङ्किता सती बहुकालाय
सुरक्षिता अतिष्ठत्। वैज्ञानिकप्रविधेः
प्रगतियात्रा पुनरपि अग्रे गता। अद्य
सर्वाणि कार्याणि सङ्गणकनामकेन
यन्त्रेण साधितानि भवन्ति।



परिवर्तन के काल में कागज का
तथा लेखनी के आविष्कार से सभी के
मन में स्थित भावों का कागज के ऊपर
लेखन प्रारंभ हुआ। छपाई के यंत्र के
आविष्कार के द्वारा लिखित सामग्री
छापी जाकर बहुत समय तक सुरक्षित
हो गई। वैज्ञानिक तकनीकी विधि की
प्रगति यात्रा पुनः आगे चलती रही।
आज सभी कार्य कंप्यूटर नाम की यंत्र
के द्वारा सिद्ध होते हैं।



समाचार-पत्राणि, पुस्तकानि च
कम्प्यूटरमाध्यमेन पठ्यन्ते लिख्यन्ते च।
कर्गदोद्योगे वृक्षाणाम् उपयोगेन वृक्षाः
कर्त्यन्ते स्म, परम् सङ्गणकस्य
अधिकाधिक-प्रयोगेण वृक्षाणां कर्तने
न्यूनता भविष्यति इति विश्वासः। अनेन
पर्यावरणसुरक्षायाः दिशि महान्
उपकारो भविष्यति। अधुना आपणे
वस्तुक्रयार्थम् रूप्यकाणाम् अनिवार्यता
नास्ति।



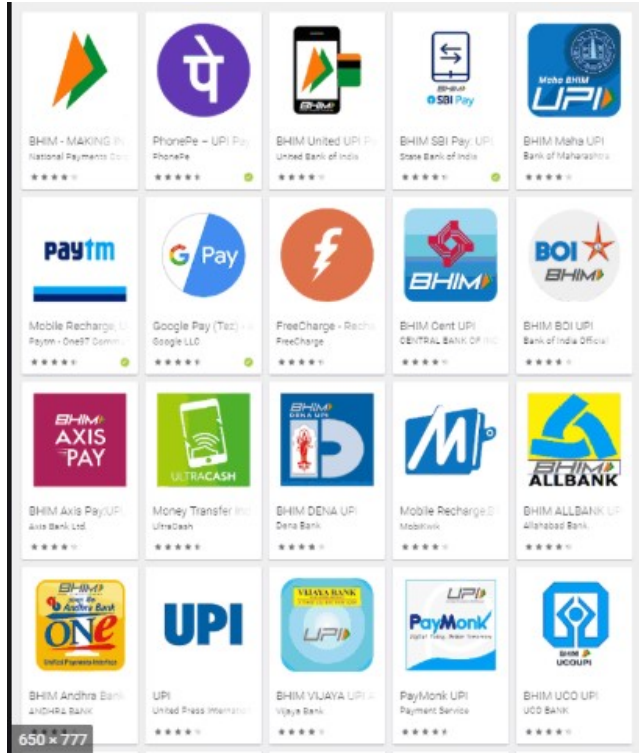
समाचार पत्र तथा पुस्तक कंप्यूटर के
माध्यम से पढ़ी जाती है तथा लिखी
जाती है। कागज के उद्योग में वृक्षों का
उपयोग होने से वृक्ष काटे जाते थे, परंतु
कंप्यूटर के अधिकाधिक प्रयोग से वृक्षों
के काटने में कमी होगी यह विश्वास है।
इससे पर्यावरण की सुरक्षा की दशा में
महान उपकार होगा। अब बाजार में
वस्तुओं को खरीदने के लिए रुपयों की
अनिवार्यता नहीं है।






“डेबिट कार्ड”, “क्रेडिट कार्ड”
इत्यादयः सर्वत्र रूप्यकाणां स्थानं
गृहीतवन्तः। वित्तकोशस्य (बैंकस्य)
चापि सर्वाणि कार्याणि
सङ्गणकयन्त्रेण सम्पाद्यन्ते। बहुविधाः
अनुप्रयोगाः (APP) मुद्राहीनाय
विनिमयाय (Cashless
Transaction) सहायकाः सन्ति ।

डेबिट कार्ड तथा क्रेडिट कार्ड
इत्यादि ने सभी स्थानों पर रुपयों का
स्थान ले लिया है। बैंक के सभी
कार्य कंप्यूटर यंत्र के द्वारा संपन्न
किए जाते हैं। अनेक प्रकार के
अनुप्रयोग मुद्रा रहित लेनदेन के
लिए सहायक है।



कुत्रापि यात्रा करणीया भवेत् रेलयानयात्रापत्रस्य,
वायुयानयात्रापत्रस्य अनिवार्यता अद्य नास्ति।
सर्वोणि पत्राणि अस्माकं चलदूरभाषयन्त्रे 'ई-मेल'
इति स्थाने सुरक्षितानि भवन्ति यानि सन्दर्श्य वयं
सौकर्येण यात्रायाः आनन्दं गृह्णीमः।



कहीं भी यात्रा करनी हो, रेल टिकट तथा
हवाई जहाज टिकट कि आज अनिवार्यता
नहीं है। सभी पत्र हमारे मोबाइल फोन में
'ई-मेल' स्थान पर सुरक्षित होते हैं, जिन्हें
दिखला कर हम सुगमता से यात्रा के आनंद
को ग्रहण करते हैं।

Airline

BOARDING PASS

WOR ✈ VAC
WORK VACATION

FLIGHT

F5-1513

SEAT

18 D

DATE

C 12

DATE

08 Mar 2019



चिकित्सालयेऽपि उपचारार्थं रूप्यकाणाम् आवश्यकताद्य नानुभूयते।
सर्वत्र कार्डमाध्यमेन, ई-बैंकमाध्यमेन शुल्कं प्रदातुं शक्यते। तद्दिनं
नातिदूरम् यदा वयम् हस्ते एकमात्रं चलदूरभाषयन्त्रमादाय सर्वाणि
कार्याणि साधयितुं समर्थाः भविष्यामः।



अस्पताल में भी इलाज के लिए रुपयों की आवश्यकता अनुभव नहीं
की जाती है। सभी स्थानों पर कार्ड के माध्यम से तथा ई बैंक के
माध्यम से फीस दी जा सकती है। वह दिन दूर नहीं है जब हम हाथ में
एकमात्र मोबाइल फोन लेकर सभी कार्य सिद्ध करने में समर्थ होंगे।



वस्त्रपुटके रूप्यकाणाम्
आवश्यकता न भविष्यति।
'पासबुक' 'चैक्बुक' इत्यनयोः
आवश्यकता न भविष्यति।
पठनार्थं पुस्तकानां
समाचारपत्राणाम् अनिवार्यता
समाप्तप्राया भविष्यति।
लेखनार्थम् अभ्यासपुस्तिकायाः
कर्गदस्य वा, नूतनज्ञानान्वेषणार्थं
शब्दकोशस्याऽपि आवश्यकता न
भविष्यति।



जेब में रुपयों की आवश्यकता
नहीं होगी पासबुक तथा चेक बुक
इन की आवश्यकता नहीं होगी
पढ़ने के लिए पुस्तकों की तथा
समाचार पत्रों की अनिवार्यता
लगभग समाप्त हो जाएगी लिखने
के लिए अभ्यास पुस्तिका की
अथवा कागज की नवीन ज्ञान के
खोजने के लिए डिक्शनरी की भी
आवश्यकता नहीं होगी

अपरिचित-मार्गस्य ज्ञानार्थं
मार्गदर्शकस्य मानचित्रस्य
आवश्यकतायाः अनुभूतिः अपि न
भविष्यति। एतत् सर्वं एकेनेव यन्त्रेण
कर्तुं, शक्यते। शाकादिक्रयार्थम्,
फलक्रयार्थम्, विश्रामगृहेषु कक्षां
सुनिश्चितं कर्तुं, चिकित्सालये शुल्क
प्रदातुम्, विद्यालये महाविद्यालये चापि
शुल्कं प्रदातुम्, किं बहुना दानमपि दातुं
चलदूरभाषयन्त्रमेव अलम्।
डिजीभारतम् इति अस्यां दिशि वयं
भारतीयाः द्रुतगत्या अग्रेसरामः।

अनजान मार्ग के ज्ञान के लिए
मार्गदर्शक मैप की आवश्यकता की
अनुभूति भी नहीं होगी। यह सब एक
ही यंत्र के द्वारा किया जा सकता है।
सब्जी आदि खरीदने के लिए, फल
खरीदने के लिए, विश्राम गृह में कमरा
सुनिश्चित करने के लिए, अस्पताल में
फीस देने के लिए तथा स्कूल या कॉलेज
में भी फीस देने के लिए, अधिक क्या
कहे दान देने के लिए भी मोबाइल फोन
ही पर्याप्त है। डिजिटल भारत इस
दिशा में हम भारतीय तीव्र गति से आगे
बढ़ रहे हैं।

ધાન્યવાદઃ